फरीदाबाद
मजदूर समाचार
अनुभवों तथा विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें—
< http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.in >

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद - 121001

नई सीरीज नम्बर 333 1/— मार्च 2016

पटकथा की समय सीमा समाप्त

अच्छा, मैंने बार-बार यही देखा है कि मजदूरों के उभार को जब भी लिखने में, या भाषण में, या फिल्मों में लाते हैं तो कम्पनी की ताकत को, सरकार की ताकत को दिखाने में लग जाते हैं।

बात तुम्हारी शायद ठीक है, मान भी ली लेकिन मेरे ख्याल से समस्या थोड़ी गहरी है।

पहेलियाँ मत बुझा, बता मैं क्या गलत बोल रहा हूँ?

उखड़ मत यार, बात सुन। कहीं पर ताकत की एक गहरी उलट समझ है।

तू कह रहा है कि ताकत की छवि पलटी हुई है?

देख, अगर ऐसे सोच कि हम किसको ताकतवर बोलना चाहेंगे?

मैं तो किसी को ताकतवर ना बोलूँ :)

ठीक है, ठीक है, तू स्मार्ट है पर बात तो सुन ले। ताकतवर वह हो सकता है जो कम से कम खर्चे, कम से कम तामझाम रखते हुये भी शान से गहरा असर डालता है और उत्पादक रखता है। उत्पादक को बनाये रखता है, उत्पादकता को बढाता है।

तो मैडम, इसका उलटा क्या होगा?

अभी तुझे क्या दिखता है?

यह तो है कि पिछले पाँच साल में जब से मैं काम में लगा हूँ — और कई फैक्ट्रियों में काम किया हूँ — तब से देख रहा हूँ कि युवा वरकर किसी से डरते नहीं और नौकरी की परवाह नहीं करते।

हाँ, और हमारे इसी क्षेत्र में पुलिस, कमाण्डो बढे जा रहे हैं।

तेरी बात को मैं थोड़ी जान देता हूँ। तमिल नाडु में एक जज ने एक मैनेजर की हत्या के लिये आठ वरकरों को दोहरे आजीवन कारावास की सजा सुनाई। यह था दिसम्बर में। और जनवरी के शुरू में ही उसी क्षेत्र की दूसरी फैक्ट्री के युवा वरकर पाँच दिन फैक्ट्री से निकले ही नहीं। फैक्ट्री के अन्दर और बाहर बैठे रहे ।

ले, अब बता। कौन मापे किसका आत्मविश्वास और साहस।

फिर यह क्यों है कि पेशेवर लिखने वाले, पेशेवर भाषण देने वाले और इन से प्रभावित होने वाले बार-बार, हर बार जब भी मजदूरों का उभार देखते हैं तो एक बेचारे, बिना बुद्धि के, अनुभवहीन पेश करते हैं?

हाँ, दिशाहीन क्यों दिखाते हैं?

यह तो हैरान करने वाली बात है।

दिखता तो है कि ढीली होती पकड़, डगमगाता आत्मविश्वास और कर्कश चिल्लाहट कहीं जुड़े हैं।

दोस्त, यह तो मनोरंजन के लिये सामग्री है। सिनेमा हाल टूट रहे हैं और जैसे कि सब कुछ सिनेमा हो गया है।

यार, यह बात तो है कि इस पटकथा और पाठ्यक्रम की समय सीमा समाप्त हो गई है।

माना। इस समाप्ति के रोने-धोने पर अपने को बोर नहीं करें।

असंगत बन गये है

कैपिटल रेडियो (बी-6/4 ओखला फेज-2, दिल्ली) फैक्ट्री में पावर प्रैसों पर 5 मजदूरों के हाथ कट चुके हैं, एक का अँगूठा फरवरी में कटा। कार्ड पंच सुबह 8½ और साँय 5 ही होता है जबकि कार्य सुबह 6 आरम्भ होता है। ई एस आई तथा पी एफ 50-60 की हैं और 60-70 की नहीं हैं।

पी ए सी (307 सैक्टर-8, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 900 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में गियर बनाते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से भी कम। सब वरकर टेम्परेरी हैं।

श्याम मैटल (12 सैक्टर-24, फरीदाबाद) फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 7600 की बजाय 5600 रुपये, ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं। ऑपरेटरों की ई एस आई तथा पी एफ 5995 पर काटते हैं...... साल-भर से जमा नहीं कर रहे।

हरकॉम एयरफ्लैक्स (डी-154 ओखला फेज-1, दिल्ली) सर्विस व प्रोजेक्ट सेन्टर में हैल्परों को 9178 की बजाय 7000 रुपये तनखा। इन 7000 में से ई एस आई व पी एफ राशि काटते हैं........ नेट पर पी एफ नम्बर मैच नहीं करता।

सोनी इन्डस्ट्रीज (118 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 7600 की जगह 5600 रुपये तनखा। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। 180 मजदूरों में 150 की ई एस आई नहीं, पी एफ नही।

राजषी स्टीयरिंग (3 सैक्टर-27 सी, फरीदाबाद) फैक्ट्री में 7600 की बजाय पुराने हैल्परों की तनखा 6890 रुपये और नये हैल्परों की 5720 रुपये। रोज 3 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से।

एलोरा क्रिश्चियन एक्सपोर्ट (एफ-23/1 ओखला फेज-2, दिल्ली) फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 6500 और चैकरों की 8000-9000 रुपये। फरवरी में कम्पलायन्स वाले आये तब एच आर मैनेजर घूम-घूम कर कह रहा था कि 8000 मत बताना, कहना कि 11,154 रुपये मिलते हैं।

एल जी बी (17 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। 20 परमानेन्ट और 200 टेम्परेरी वरकर जिन में ऑपरेटर, आई टी आई को भी हैल्पर ग्रेड, 7600 रुपये।

सोलर प्रिन्टिंग प्रैस (डी-10/5, डी-10/7, डी-16/2, ओखला फेज-2 दिल्ली) में 400 कैजुअल वरकरों को दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन, 9178 से भी कम 6500 रुपये तनखा। इन 400 की ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं।

ए एस के (157 सैक्टर-5, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। टेम्परेरी ऑपरेटरों को भी हैल्पर ग्रेड, 7600 रुपये। तनखा देरी से, 15 से 18 तारीख।

क्रियेटिव इम्पैक्स (सी-55 तथा सी-49/7 ओखला फेज-2, दिल्ली) फैक्ट्रियों में प्रोडक्शन में महीने में 125-150 घण्टे ओवर टाइम तथा फिनिशिंग में इस से भी ज्यादा। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। चैकिंग वाले आये तब 29 फरवरी और फिर 1 मार्च को चन्द परमानेन्ट को छोड़ कर सब मजदूरों को बाहर कर दिया।

ए एम एस (103 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से।

सुरक्षाकर्मी

केन्द्र सरकार के एन एच 4, फरीदाबाद स्थित कार्यालयों और तीन केन्द्रीय विद्यालयों में गार्ड तथा सफाईकर्मी ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखते हैं। हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी नहीं, ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं यह बातें एक कार्यालय हैड को दिसम्बर में गार्डों व सफाईकर्मियों ने लिख कर दी थी। ठेकेदार कम्पनी को हिसाब ठीक करने, वरकरों के पी एफ के चार लाख रुपये जमा करने के आदेश दिये गये। नहीं किया। उस ठेकेदार कम्पनी का ठेका समाप्त कर दिया गया। नई ठेकेदार कम्पनी ने वही वरकर रखे और फरवरी की तनखा ए टी एम में ग्रेड अनुसार भेजी है, ई एस आई तथा पी एफ राशि काट कर।

स्विफ्ट सेक्युरिटी (मुख्यालय पीतमपुरा) दिल्ली में 2000 गार्डों से 12-12 घण्टे की शिफ्टों में ड्युटी करवाती है। एक सत्यम सिनेमा पर 8-8 घण्टे की ड्युटी थी, वहाँ ठेका टूट गया। साप्ताहिक अवकाश नहीं। गार्ड को प्रतिदिन 12 घण्टे 30-31 दिन ड्युटी पर ई एस आई व पी एफ राशि काट कर 11,390 रुपये।

वॉचडोग सेक्युरिटी (मुख्यालय नेहरू प्लेस, दिल्ली) के आई एम टी मानेसर में 150 गार्ड हैं। साप्ताहिक अवकाश नहीं। सातों दिन ड्युटी पर ओवर टाइम के कोई पैसे नहीं।

24 सेक्यूअर (कार्यालय बदरपुर, दिल्ली) 2000 से ज्यादा गार्ड सप्लाई करती है। प्रतिदिन 12 घण्टे 30-31 दिन ड्युटी के ई एस आई तथा पी एफ राशि काट कर गार्ड को 12,000-12,500 रुपये..... सैक्टर-11, फरीदाबाद में गार्ड को 8600 रुपये ही। एतराज पर कहते है कि क्लाइन्ट नहीं देता।

औ *(पेज तीन का शेष)*

कप-प्लेट धोने से होते हुये सुरेन्द्र पावर प्रैस ऑपरेटर बना। दो पैसे बचाये। स्वयं 2013 में अपना विवाह किया। फरीदाबाद में गिल इंजीनियरिंग में 27.1.2015 को पावर प्रैस पर बाँया हाथ कलाई से कट गया। ई एस आई से उपचार। जुलाई में मेडिकल फिटनेस। यह-वह कागज पूरे करने के लिये भागदौड़ की। 26 वर्षीय सुरेन्द्र की ई एस आई से 3000 रुपये महीना पेन्शन लगी। हाथ कटने के बाद से ही पत्नी नौकरी करने लगी, कहीं एक महीने तो कहीं दो महीने, 4500 रुपये तनखा में। साली की शादी में गाँव गया। कुछ दिन आराम किया। लौट कर आया तो फैक्ट्री में ड्युटी पर नहीं लिया। पत्नी से रोज चिक-चिक होने लगी। टेन्शन में शराब पीने लगा। बच्ची के साथ पत्नी 13 जनवरी को मैके चली गई।

निमंत्रण

मार्च में हर रविवार को मिलेंगे। सुबह 10 से देर साँय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। फरीदाबाद में बाटा चौक से थर्मल पावर हाउस होते हुए रास्ता है। ऑटोपिन झुग्गियाँ पाँच-सात मिनट की पैदल दूरी पर हैं।

Ph. 0129-6567014

E-mail < majdoorsamachartalmel@gmail.com >

E-mail < baatein1@yahoo.co.uk >

- *अपने अनुभव व विचार मजदूर समाचार में छपवा कर चर्चाओं को और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते।*
- *बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दें।*
- *महीने में एक बार छापते हैं, 13,000 प्रतियाँ निशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं।*

चर्चाओं के लिए समय निकालें।

रजिस्ट्रेशन ऑफ न्यूज पेपर सेंटर रूल्स 1956 के अनुसार स्वामित्व व अन्य विवरण का ब्यौरा फार्म नं. 4 (रूल नं. 8)

फरीदाबाद मजदूर समाचार

1. प्रकाशन का स्थान — मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, फरीदाबाद—121001
2. प्रकाशन अवधि — मासिक
3. मुद्रक का नाम — शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)
4. प्रकाशक का नाम — शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)
5. संपादक का नाम — शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार हों। केवल शेर सिंह

मैं, शेर सिंह, एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनाँक 1 मार्च 2016 — हस्ताक्षर शेर सिंह प्रकाशक

ओमैक्स (6 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में हैल्परों को जनवरी की तनखा 5400-5600-6000 रुपये दी जबकि दिसम्बर की तनखा देते समय बोले थे कि जनवरी की तनखा के साथ एरियर जोड़ कर देंगे। 600 वरकर इकट्ठे हो कर गये तो साहब बोले कि 27 फरवरी को देंगे। नहीं दिये। 29 फरवरी को कुछ वरकर गये तो साहब बोले कि नोटिस लगा देंगे एरियर के साथ देंगे।

परसनल क्रियेशन (वाई-1 ओखला फेज-2, दिल्ली) फैक्ट्री में दी लाइफ, आस्ट्रेलिया का काम होता है। हैल्परों को न्यूनतम 9178 से कम 6000 रुपये तनखा। प्रैसमैन और चैकरों की 11,154 की बजाय 8000-8500 रुपये तनखा। कुछ टेलर पीस रेट पर, सिलाई का अधिकतर काम बाहर करवाते हैं। दिसम्बर में एक यूनियन के पास गये, नेता पैसे ले गये, 18 वरकरों की नौकरी गई। फिर 14 जनवरी को 200 मजदूरों ने लन्च बाद काम बन्द कर दिया और रात 2 बजे तक रुकने की बजाय साँय 6½ छुट्टी कर ली। अगले दिन सुबह आधा घण्टा काम करने के बाद सब ने फिर काम बन्द कर दिया। मैनेजमेन्ट बौखला गई, बिजली काट दी, बॉयलर बन्द कर दिया, ताला लगायेंगे....... 11 बजे मजदूरों ने काम आरम्भ कर दिया। कम्पनी दो चार्ट बनाती है, ग्रेड वाले पर 5 या 6 तारीख को हस्ताक्षर करवाती है और फिर विदाउट ग्रेड वाले चार्ट पर 7 तारीख को पेमेन्ट।

मारुति सुजुकी (आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री के कार प्लान्ट में ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 1200-1300 वरकर सीधे-सीधे प्रोडक्शन में हैं। जनवरी में मीटिंग में सुपरवाइजर बोले थे कि ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को बी-शिफ्ट में 60 रुपये और सी-शिफ्ट में 80 रुपये अलाउन्स दिया जायेगा। लेकिन यह अलाउन्स नहीं दिया है।

इण्डो ऑटोटेक (261 सैक्टर-24, फरीदाबाद) फैक्ट्री में हर सोमवार को गुड मॉर्निंग मीटिंग होती थी। दिसम्बर में इन गुड मॉर्निंग मीटिंगों में मजदूरों ने साहबों से नये ग्रेड के बारे में पूछना शुरू किया। बोलते थे मिलेगा। नहीं दिया। मैनेजमेन्ट ने जनवरी में पहले सोमवार से गुड मॉर्निंग मीटिंग बन्द कर दी। नये भर्ती हैल्पर 7600 की बजाय 5887 रुपये तनखा का पता लगते ही छोड़ जाते हैं।

बोनी पोलीमर्स (34 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। एक भी मजदूर परमानेन्ट नहीं है, सब टेम्परेरी वरकर हैं। ऑपरेटरों को हैल्परों वाली 7600 रुपये तनखा। जनवरी में 50 ऑपरेटर इकट्ठे हो कर एच आर विभाग गये तो साहब बोले कि पैसे बढायेंगे।

शिवम् ऑटो (बिनौला, गुड़गाँव) फैक्ट्री में 425 परमानेन्ट मजदूरों की 8-8 घण्टे की शिफ्ट हैं और तीन ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 800 वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। सरकार द्वारा नये ग्रेड के प्रचार के साथ ही कम्पनी ने चुपके-चुपके से 5-5, 7-7 को बुला कर कल से नहीं आना का सिलसिला आरम्भ किया। सितम्बर के दूसरे सप्ताह में एक दिन टेम्परेरी वरकरों ने काम बन्द कर दिया। परमानेन्ट ने साथ नहीं दिया। दूसरी शिफ्ट में काम आरम्भ हो गया पर कम्पनी डर गई और अस्थाई मजदूरों को निकालना रोक दिया। अब 800 में पुराने हैल्पर 400 हैं और उनकी तनखा 7600 है पर जो नये हैल्पर हैं उनकी तनखा 6500-7000 रुपये है।

एमटेक (53-54 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में नये ग्रेड से पहले हैल्परों को ग्रेड के अलाव 1200-1400 रुपये मकान किराया और यात्रा भत्ता के रूप में मिलता था। नये ग्रेड वाले 7600 लागू किये तब भत्तों वाले 1200-1400 खा गये। इकट्ठे हो कर वरकर साहबों के पास जाते हैं तब कहते हैं कि भत्ते दे देंगे, अगले महीने दे देंगे।

सिक्को सेवन इलेक्ट्रोनिक्स (एफ-47 ओखला फेज-1, दिल्ली) फैक्ट्री में हैल्पर की तनखा 9178 रुपये दिखाते हैं और उसी पर ई एस आई तथा पी एफ काटते हैं पर कइयों को इसके लिये 8 घण्टे की बजाय रोज 10-11 घण्टे की ड्युटी करनी पड़ती है।

कार्मिक (177 सैक्टर-4, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में हैल्परों से हस्ताक्षर 7600 पर करवाते हैं जबकि तनखा 6000 रुपये है और इन 6000 में से ई एस आई तथा पी एफ राशि काटते हैं। 150 में से 11 ने 29 फरवरी को नौकरी छोड़ी, 1 मार्च को और द्वारा नौकरी छोड़ने की बात थी। वर्ष में 500 रुपये बढाते हैं, 7 महीने का एरियर तब दिया जब 10 फरवरी को मजदूरों ने हँगामा किया।

सनराइज (111 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में अल्युमिनयम की कास्टिंग। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। ऑपरेटरों को हैल्पर ग्रेड वाले 7600 रुपये। इकट्ठे हो कर ऑपरेटर गये तो साहब बोले कि मार्च-अप्रैल में बढायेंगे।

नील मैटल (बसकुसला गाँव, सैक्टर-7, आई एम टी मानेसर के सामने) फैक्ट्री में भर्ती किया तब तनखा 8500 और प्रेजेन्टी 900 रुपये बताई थी। तनखा दी 7800 रुपये। बोले अगले महीने देंगे। फिर अगले महीने। तीन महीने बाद बोले कि नहीं दे पायेंगे तब खूब गालियाँ दी और नौकरी छोड़ दी। ***आई डी टी इन्टरनेशनल*** (21 सैक्टर-4, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में सूती कपड़ों की रंगाई और फैन्सी कपड़ों की रफू तथा प्रैस होती थी। दिसम्बर की तनखा के लिये 10 जनवरी से मजदूर इकट्ठे हो कर साहब के पास जाने लगे। अकेला कोई नहीं जाता था। बोले तनखा 15 को देंगे। नहीं दी। फिर बोले कि 18 को देंगे। नहीं दी। सब वरकर 19 को श्रम विभाग गये। फैक्ट्री 25 जनवरी को बन्द हो गई। फोन द्वारा बुला कर दिसम्बर की तनखा दी और फिर जनवरी के 18 दिन के पैसे भी दिये। **(शेष पृष्ठ दो पर)**

---

1 जनवरी से देय महँगाई भत्ते की घोषणा हरियाणा सरकार ने मार्च के पहले सप्ताह तक नहीं की थी।

1 अक्टूबर 2015 से मार्च के प्रथम सप्ताह तक दिल्ली सरकार ने निर्धारित न्यूनतम वेतन में कोई परिवर्तन नहीं किया है।

कुछ इमेल पते

मुख्य मन्त्री, हरियाणा	< cm@hry.nic.in>
श्रम मन्त्री, हरियाणा	< labourm-hry@nic.in>
श्रम आयुक्त, हरियाणा	< labour@hry.nic.in>
मुख्य मन्त्री, दिल्ली	< cmdelhi@nic.in>
श्रम मन्त्री, दिल्ली	< gopalrai.delhi@gov.in >
श्रम विभाग दिल्ली	< labjlc2.delhi@nic.in >

ई एस आई के लिये :

महानिदेशक < dir-gen@esic.nic.in >

चीफ विजिलैन्स < cvohq-dl@esic.nic.in >

फण्ड (पी एफ) के लिये :

केन्द्रीय भविष्यनिधि आयुक्त < cpfc@epfindia.gov.in >

चीफ विजिलैन्स पी एफ < cvo@epfindia.gov.in >

कम्पलायन्स पी एफ < acc.compliance@epfindia.gov.in >

होण्डा टपुकड़ा के बहाने

17 फरवरी दोपहर को मजदूर समाचार के वितरण के दौरान होण्डा मानेसर फैक्ट्री के बी तथा ए-शिफ्ट के कुछ मजदूरों से बातचीतें हुई।

टपुकड़ा, अलवर, राजस्थान स्थित होण्डा दुपहिया फैक्ट्री में 4 स्थाई मजदूरों की बरखास्तगी के खिलाफ होण्डा मानेसर यूनियन लीडरों ने 16 फरवरी को चाय का बहिष्कार करने को कहा। नेताओं और स्थाई मजदूरों ने फैक्ट्री में नारे भी लगाये। अस्थाई मजदूरों का कहना था कि चाय का बहिष्कार करने की बजाय टी-ब्रेक को आधा घण्टा करते तो उत्पादन प्रभावित होता, कम्पनी पर असर पड़ता। परमानेन्ट ने जब नारे लगाये तब लाइनें चल रही थी और टेम्परेरी वरकर लाइनों पर कार्यरत थे। होण्डा मानेसर फैक्ट्री में उत्पादन का अधिकतर कार्य अस्थाई मजदूर करते हैं और स्थाई को देखरेख वाले कह सकते हैं। टेम्परेरी वरकरों की सँख्या परमानेन्ट वरकरों से चार-पाँच गुणा है। और, स्थाई मजदूरों की तनखा अस्थाई मजदूरों की तनखा से चार-पाँच गुणा है। होण्डा टपुकड़ा फैक्ट्री 2011 में शुरू हुई, इसमें परमानेन्ट और टेम्परेरी वरकरों की तनखा में बहुत फर्क नहीं है, 16 फरवरी को दोपहर में काम बन्द कर परमानेन्ट और टेम्परेरी वरकर फैक्ट्री में एक स्थान पर एकत्र हो गये। राजस्थान पुलिस ने 7 बजे लाठीचार्ज और गिरफ्तारियाँ कर मजदूरों को फैक्ट्री के बाहर निकाला।

होण्डा मानेसर फैक्ट्री 2001 में शुरू हुई थी और स्थाई, ट्रेनी, अस्थाई मजदूरों के बीच बढते तालमेलों ने कम्पनी की नाक में दम किया। फैक्ट्री में कार्यरत सब वरकरों के जोड़ों से आज की हालात में फैक्ट्री आधार पर वास्तव में मजदूर संगठन आकार लेने लगा जिससे पार पाने के लिये 2005 में कम्पनी तथा सरकार ने एक तरफ पुलिस का प्रयोग किया और दूसरी तरफ यूनियन का रजिस्ट्रेशन किया। जो 500 ट्रेनी 2005 में थे उन सब को निकाल दिया और आगे से ट्रेनी रखने बन्द कर दिये। जो अस्थाई मजदूर 2005 में थे उन सब को निकाल दिया, नई भर्ती की और फिर टेम्परेरी वरकरों की सँख्या काफी बढी है।

2005 में यूनियन के रजिस्ट्रेशन के बाद होण्डा मैनेजमेन्ट ने यूनियन को मान्यता दे दी। फैक्ट्री के अन्दर यूनियन का कार्यालय है। परमानेन्ट मजदूर ही यूनियन के सदस्य हैं। टेम्परेरी वरकर यूनियन के मेम्बर बन ही नहीं सकते। ऐसा नियम-कानून है। फरीदाबाद में एस्कोर्ट्स फैक्ट्रियाँ हों चाहे गुड़गाँव व मानेसर में मारुति सुजुकी फैक्ट्रियाँ, इन में यूनियनों के सदस्य परमानेन्ट वरकर ही हैं। एक भी टेम्परेरी वरकर इन यूनियनों का सदस्य नहीं है, मेम्बर बन ही नहीं सकते। और, आज आमतौर पर फैक्ट्रियों में 5-10-15-20 प्रतिशत परमानेन्ट मजदूर तथा 80-90-95 प्रतिशत टेम्परेरी वरकर हैं।

2006 में होण्डा मानेसर में यूनियन और मैनेजमेन्ट के बीच तीन वर्ष का समझौता हुआ जिसमें निर्धारित उत्पादन बढाया गया और स्थाई मजदूरों की तनखा बढाई गई। टेम्परेरी वरकरों पर काम का बोझ बढाया गया और तनखा नहीं बढाई। समझौते के अगले ही दिन, ए-शिफ्ट के 1500 अस्थाई मजदूर प्रोडक्शन में लगने की बजाय सुबह 6½ कैंटीन में जा कर बैठ गये थे और बी-शिफ्ट के टेम्परेरी वरकर उसी समय फैक्ट्री गेट पर एकत्र हो गये थे। मैनेजमेन्ट, पुलिस, प्रशासन, न्यायालय और रंग-बिरंगे बिचौलियों को पाँच दिन ऊठक-बैठक करनी पड़ी थी।

होण्डा मानेसर में 2006 से यूनियन-मैनेजमेन्ट समझौते होते रहे हैं। हर समझौते के बाद स्थाई मजदूरों तथा अस्थाई मजदूरों की तनखा में भेद बढते आये हैं। और, आज मानेसर फैक्ट्री में वर्ष में 16 लाख दुपहियों का उत्पादन होता है।

होण्डा टपुकड़ा फैक्ट्री 2011 में चालू हुई और यहाँ वर्ष में 12 लाख दुपहियों का उत्पादन होता है। कम्पनी की तीसरी टू व्हीलर फैक्ट्री नरसापुर, करनाटक में 2013 में आरम्भ हुई जिसमें वर्ष में होते 18 लाख दुपहियों के उत्पादन को अब बढा कर 24 लाख कर दिया है। इधर कम्पनी की चौथी फैक्ट्री विट्ठलपुर, मेहसाना, गुजरात में 16 फरवरी से शुरू हुई है जिसमें वर्ष में 12 लाख स्कूटरों का उत्पादन होगा।

होण्डा टपुकड़ा के करीब 400 परमानेन्ट मजदूरों और 4000 टेम्परेरी वरकरों के बीच बढते तालमेलों से पार पाने के लिये कम्पनी तथा सरकार ने अब 2016 में 2005 वाले तरीकों को दोहराया है। पुलिस का प्रयोग और यूनियन रजिस्ट्रेशन मुद्दा! चार हजार टेम्परेरी वरकर, फैक्ट्री में कार्यरत मजदूरों का नब्बे प्रतिशत, यूनियन के सदस्य बन ही नहीं सकते और रंग-बिरंगे बिचौलिये यूनियन रजिस्ट्रेशन की डुगडुगी बजा रहे हैं।

फैक्ट्री से निकाल दिये जाने के बाद होण्डा टपुकड़ा वरकरों को गुड़गाँव में यूनियनों के लीडरों ने यहाँ हरियाणा में बुलाया। समर्थन के तौर पर कई यूनियनों के लीडरों ने 19 फरवरी को भाषण दिये, होण्डा टपुकड़ा वरकरों के माई-बाप के तौर पर 13 यूनियनों के लीडरों की समिति की घोषणा की, और प्रदर्शन का नेतृत्व किया........... मारुति सुजुकी मानेसर के परमानेन्ट, ट्रेनी, अप्रेन्टिस, तथा ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे वरकरों ने जून 2011 से जुलाई 2012 के दौरान अपने तालमेल बनाये रखे, तालमेल बढाये, और किन्हीं बिचौलियों को माई-बाप नहीं बनने दिया था। मजदूरों का उभार बढता गया था और कम्पनी द्वारा, सरकार द्वारा रियायत पर रियायत के बावजूद 18 जुलाई 2012 को उभार उस ऊँचाई पर पहुँचा जहाँ मजदूरी-प्रथा के दो प्रतीक, मैनेजर और फैक्ट्री बिल्डिंग मजदूर उभार की लपेट में आये। रंग-बिरंगे बिचौलिये तब अति सक्रिय हुये थे और 16 यूनियनों के लीडरों की समिति बना कर उसे मारुति मानेसर मजदूरों का माई-बाप घोषित कर दिया। उस समिति ने मानेसर से परे गुड़गाँव को गतिविधि-स्थल निर्धारित किया। गतिविधियाँ थी : इस-उस नेता-मंत्री को ज्ञापन देना, जब-तब सभा कर भाषणों को-भाषण करने वालों को अवसर देना, जब-तब प्रदर्शन का नेतृत्व करना, भूख हड़ताल। मारुति सुजुकी मानेसर के अधिकतर मजदूर इस 16 यूनियनों के लीडरों की समिति के फेर में नहीं आये लेकिन आई एम टी मानेसर की हजारों फैक्ट्रियों को स्थल एवं प्रस्थान-बिन्दु के तौर पर विकल्प भी प्रस्तुत नहीं कर सके। फैक्ट्री के अन्दर वर्ष-भर कितना कुछ किया जिसके लिये मारुति सुजुकी मानेसर मजदूरों ने किसी की अनुमति नहीं ली थी। इसलिये वे आगे बढते रहे थे। जुलाई 2012 में पूरे औद्योगिक क्षेत्र में बिना किन्हीं की अनुमति के करना बहुत-ही सम्भव बना पर हो नहीं पाया। और ऐसे में, 546 बरखास्त स्थाई मजदूर तथा जेल में बन्द 147 मजदूरों के परिवार इस 16 की समिति के बँधुआ-से हो गये। दिसम्बर 2012 तक 16 की समिति बरदाशत से बाहर हो गई तब उसका स्थान उग्र भाषा बोलने वालों ने लिया और वे बँधुआ-सों को और दूर, गुड़गाँव से कैथल ले गये। परिणाम : वर्ष-भर बाद, 18 जुलाई 2013 को दिन में मोमबत्तियाँ जला कर, मृत मैनेजर की तस्वीर उठा कर और उन्हें मजदूरों का पक्षधर घोषित कर, पुलिस द्वारा गुड़गाँव में बताये पार्क में मजदूर उभार की बरसी मनाई..... .... इधर 13 यूनियनों के लीडरों की समिति गुड़गाँव बुलाये होण्डा टपुकड़ा वरकरों से बोली की आरक्षण बवाल के कारण हरियाणा में धारा 144 लगी है इसलिये धरना-प्रदर्शन के लिये वे जयपुर जायें। और फिर, जयपुर में नेता लोग बोले कि अलवर जाओ...............

महत्वपूर्ण बात यह है कि यूनियन नेताओं की बिचौलियागिरी को इतनी बार भुगतने के बाद भी उन्हें अपने पास फटकने क्यों देते हैं? मुन्नार के चाय बागानों की महिला मजदूरों ने रंग-बिरंगे बिचौलियों को भगा दिया था। क्या है जो हम सोचते हैं कि यूनियनें हमारे लिये कर देंगी? पुलिस से अनुमति मिलने पर सभा-प्रदर्शन-धरना, अफसर-विधायक-मंत्री को ज्ञापन, जब-तब पर्चा-पोस्टर, श्रम विभाग में-कोर्ट में तारीखें यूनियनों के वो काम हैं जो दिखते हैं। पर्दों के पीछे भी बहुत-कुछ होता है। और, आज फैक्ट्रियों में कार्यरत टेम्परेरी वरकरों की विशाल सँख्या तो फैक्ट्री यूनियनों की मेम्बर ही नहीं बन सकती। ऐसे में यूनियनों से क्या उम्मीद करते हैं? क्यों उम्मीद करते हैं? सोचने की बात है। सोचना जरूरी है। ◆

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए रौनिजा प्रिन्टर्स फरीदाबाद से मुद्रित किया।
RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73/15-17
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी—551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।